UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

भूगोल

CLASS-XII

मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

भूगोल (14)

MODEL PAPER (RBSE) 2

कक्षा-XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट | पूर्णांक : 56

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश:

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
6. प्रश्नों का अंक भार निम्नानुसार है।

खण्ड	प्रश्न की संख्या	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	कुल अंक भार
खण्ड- अ (A)	1 (i to ix) 2 (i to iv) 3 (i to iv)	17	1	17
खण्ड- ब (B)	4 से 15	12	1½	18
खण्ड- स (C)	16 से 18	3	3	9
खण्ड- द (D)	19 से 20	2	4	8
खण्ड- य (E)	21 से 22	2	2	4

7. प्रश्न क्रमांक 21 से 22 मानचित्र कार्य से संबंधित हैं और प्रत्येक 2 अंक का है।
8. भारत एवं विश्व के उपलब्ध कराये गये रेखा मानचित्रों को उत्तर पुस्तिका के साथ नत्थी करें।

खण्ड–अ

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) निम्नलिखित में से कौनसा एक विरल जनसंख्या वाला क्षेत्र है- [1]
(अ) पश्चिमी यूरोप (ब) दक्षिणी पूर्वी एशिया
(स) भूमध्य रेखीय प्रदेश (द) पूर्वी उत्तरी अमेरिका

(ii) विश्व में उच्चतम लिंगानुपात किस देश का है? [1]
(अ) फ्रांस (ब) लैटविया
(स) पोलैण्ड (द) इटली

(iii) डॉ. हक ने 'विकल्पों में वृद्धि' पर बल दिया, उनके अनुसार ये विकल्प हैं- [1]
(अ) स्थिर (ब) ऋणात्मक
(स) धनात्मक (द) परिवर्तशील

(iv) प्राचीनतम ज्ञात आर्थिक क्रियाएँ हैं- [1]
(अ) कृषि व पशुपालन (ब) भोजन संग्रह व आखेट
(स) मत्स्य पालन व मुर्गीपालन (द) वानिकी व खनन

(v) यूरोप का प्रमुख आन्तरिक जलमार्ग है- [1]
(अ) राइन (ब) वोल्गा
(स) सेंट लॉरेंस (द) मिसीसिपी

(vi) अदीस अबाबा व केनबरा क्रमश: राजधानी हैं- [1]
(अ) इथोपिया व न्यूजीलैण्ड की (ब) जिम्बाब्वे व न्यूजीलैंण्ड की
(स) इथोपिया व ऑस्ट्रेलिया की (द) जिम्बाब्वे व ऑस्ट्रेलिया की

(vii) मानव विकास के संदर्भ में भारत में कौनसा वर्ग हाशिए पर नही हैं? [1]
(अ) अनुसूचित जातियाँ (ब) कृषक व मजदूर
(स) स्त्रियाँ (द) उद्योगपति

(viii) निम्न में से कौनसा उद्योग शक्ति स्त्रोतों के निकट स्थापित होता है? [1]
(अ) लौह - इस्पात उद्योग (ब) ताँबा उद्योग
(स) एल्युमिनियम उद्योग (द) लुगदी उद्योग

(ix) भविष्य की पीढ़ियों का ध्यान रखकर किया जाने वाला विकास है- [1]
(अ) आर्थिक विकास (ब) सतत पोषणीय विकास
(स) मानव विकास (द) सामाजिक विकास

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(i) श्वसन तंत्र संबंधी रोग ..... प्रदूषण से होता है। [1]

(ii) आंध्रप्रदेश राज्य द्वारा ..... जल संभर कार्यक्रम चलाया गया। [1]

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

(iii) बिचौलिए सौदागरों और पूर्तिघरों से ..... व्यापार का गठन होता है। [1]
(iv) 'निर्वाचन भूगोल' ..... भूगोल का उपक्षेत्र है। [1]

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-
(i) चावल प्रधान एवं चावल रहित जीवन निर्वाह कृषि में मुख्य अन्तर क्या है? [1]
(ii) भारतीय कृषि में सिंचाई हेतु जल की अधिक मांग का मुख्य कारण आप किसे मानते हैं? [1]
(iii) 'शहरी धूम्र कुहरा' से आप क्या समझते हैं? [1]
(iv) भूगोल में उत्तर आधुनिकवाद कब से प्रारम्भ हुआ? [1]

खण्ड - ब

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

4. स्वतंत्रता के पश्चात भारत के कौन-से दो महत्त्वपूर्ण पत्तन अलग हो गये? इसकी क्षतिपूर्ति कैसे की गई? [1½]
5. पर्यावरणीय मुद्दों से सम्बंधित 'ब्रंटलैण्ड रिपोर्ट' पर टिप्पणी लिखिए। [1½]
6. भारत के प्राकृतिक गैस संसाधन पर टिप्पणी लिखिए। [1½]
7. प्रकार्यात्मक आधार पर भारत में नगरों के तीन प्रकारों का उल्लेख कीजिए। [1½]
8. प्रवास के कोई दो जनांकिकीय परिणाम लिखिए। [1½]
9. भारत के जनसंख्या वितरण में भौतिक कारकों के प्रभाव बताइए। [1½]
10. जनसंख्या घनत्व से आप क्या समझते हैं? [1½]
11. निम्न मानव विकास वाले देशों की तीन समस्याएँ लिखिए। [1½]
12. सड़क परिवहन की दो विशेषताएँ लिखिए। [1½]
13. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की दो हानियाँ बताइए। [1½]
14. 'मार्ग पत्तन' को उदाहरण सहित समझाइए। [1½]
15. 'नगर रणनीति' हेतु संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा बताई गई तीन प्राथमिकताएँ लिखिए। [1½]

खण्ड-स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

16. पंचम क्रियाओं की विवेचना कीजिए। [3]
17. हुगली औद्योगिक प्रदेश की अवस्थिति, मुख्य केन्द्रों व प्रमुख औद्योगिक क्रियाओं का वर्णन कीजिए। [3]
18. संचार जाल के बारे में आप क्या जानते हैं? इसका वर्गीकरण कीजिए। [3]

खण्ड - द

निबन्धात्मक प्रश्न–

19. भू-उपयोग से क्या तात्पर्य है? भारत में भू-उपयोग को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख कारकों पर चर्चा कीजिए। [4]

अथवा

भारत में मोटे अनाज की दो मुख्य फसलों का वर्णन कीजिए। [4]

20. परम्परागत एवं आधुनिक बड़े पैमाने वाले उद्योगों की विशेषताओं का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए। [4]

अथवा

लौह इस्पात उद्योग एवं सूती वस्त्र उद्योग की तुलना निम्न लिखित बिन्दुओं के आधार पर कीजिए- [2+2=4]
(i) उत्पादन प्रक्रिया
(ii) विश्व वितरण

खण्ड - य

21. दिए गए भारत के मानचित्र में निम्न औद्योगिक प्रदेशों को दर्शाइए- [½x4=2]
(अ) गुरूग्राम-दिल्ली-मेरठ क्षेत्र
(ब) छोटा-नागपुर क्षेत्र
(स) गुजरात क्षेत्र
(द) बेंगलुरू-चेन्नई क्षेत्र

22. दिए गए विश्व के मानचित्र में निम्न वाणिज्यिक पशुधन पालन क्षेत्रों को दर्शाइए- [½x4=2]
(अ) संयुक्त राज्य अमेरिका
(ब) न्यूजीलैण्ड
(स) अर्जेंटीना
(द) स्टेपीज मैदान

उत्तरमाला – 02

खण्ड - अ

1.

(i) **[स]**
भूमध्य रेखीय प्रदेश उष्ण-आर्द्र कठोर जलवायु तथा सघन वन्य क्षेत्रों के कारण निवास के अनुकूल नहीं है। शेष तीनों क्षेत्र रहने योग्य तथा सघन जनसंख्या वाले केन्द्र हैं।

(ii) **[ब]**
विश्व में उच्चतम लिंग अनुपात लैटविया में दर्ज किया गया है जहाँ प्रति सौ स्त्रियों पर 85 पुरुष हैं। यह देश पूर्वी यूरोप में अवस्थित है।

(iii) **[द]**
डॉ. महबूब-उल-हक, जिन्होंने मानव विकास की अवधारणा का प्रतिपादन किया, ने मानव विकास का वर्णन एक ऐसे विकास के रूप में किया है, जो लोगों के विकल्पों में वृद्धि करता हैं। ये विकल्प स्थिर नहीं, बल्कि परिवर्तनशील हैं।

(iv) **[ब]**
मानव सभ्यता के आरंभिक युग में आदिकालीन मानव का जीवन-निर्वाह दो कार्यों द्वारा होता था। पहला, पशुओं का आखेट कर तथा दूसरा, जंगली पौधे व कन्द-मूल एकत्रित कर। इस प्रकार भोजन संग्रह एवं आखेट प्राचीनतम ज्ञात आर्थिक क्रियाएँ हैं।

(v) **[अ]**
'राइन नदी' यूरोप के जर्मनी और नीदरलैंड देशों से होकर प्रवाहित होती है। यह यूरोप के एक महत्त्वपूर्ण आन्तरिक जलमार्ग की भूमिका निभाती है। वोल्गा, रूस का तथा सेंट लॉरेंस व मिसीसिपी सं.रा. अमेरिका के प्रमुख जलमार्ग हैं।

(vi) **[स]**
अदीस अबाबा इथोपिया की तथा केनबरा ऑस्ट्रेलिया की राजधानी है। जबकि जिम्बाब्वे की राजधानी हरारे तथा न्यूजीलैण्ड की राजधानी वेलिंग्टन है।

(vii) **[द]**
मानव विकास के संदर्भ में उन वर्गों को हाशिए पर स्थित कहा जाता है, जो विकास के मामले में अन्य वर्गों से पिछड़ गए हैं। कृषक, मजदूर, स्त्रियाँ, अनुसूचित जातियाँ व जनजातियाँ, धार्मिक व भाषाई अल्पसंख्यक आदि वर्ग हाशिये पर हैं।

(viii) **[स]**
एल्युमिनियम उद्योग के लिए शक्ति के स्त्रोत अधिक महत्त्वपूर्ण कारक है। जबकि लौह-इस्पात, ताँबा व लुगदी उद्योगों के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली कारक कच्चे माल की अवस्थिति है।

(ix) **[ब]**
विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (WCED) के द्वारा जारी ब्रंटलैण्ड रिपोर्ट के अनुसार सतत पोषणीय विकास का अर्थ है- 'एक ऐसा विकास जिसमें भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकता की पूर्ति को प्रभावित किए बिना वर्तमान पीढ़ी द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति करना।'

2.

(i) वायु प्रदूषण से

(ii) 'नीरू-मीरू'

(iii) थोक

(iv) राजनीतिक भूगोल

3.

(i) चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि में जलवायु उष्ण-आर्द्र प्रकार की होती है जबकि चावल रहित जीवन निर्वाह कृषि में जलवायु शीतोष्ण कटिबन्धीय उप-आर्द्र प्रकार की होती है।

(ii) हमारा मानना हैं कि देश में सिंचाई की आवश्यकता वर्षा के स्थानिक-सामयिक परिवर्तिता के कारण होती है।

(iii) **शहरी धूम्र कुहरा-** नगरों के ऊपर छाने वाले कुहरे को शहरी धूम्र कुहरा कहा जाता है। वस्तुत: यह वायुमंडलीय प्रदूषण के कारण होता है। यह मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक सिद्ध होता है।

(iv) भूगोल में उत्तर आधुनिकवाद 1990 के दशक से प्रारम्भ हुआ।

खण्ड - ब

4. 1947 में देश के विभाजन से भारत के दो अति महत्त्वपूर्ण पत्तन अलग हो गए। कराची पत्तन पाकिस्तान में चला गया और चिटगाँव पत्तन तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) में चला गया। इसकी क्षतिपूर्ति के लिए अनेक नए पत्तनों को विकसित किया गया। जैसे कि पश्चिम में कांडला तथा पूर्व में हुगली नदी पर कोलकाता के पास डायमंड हार्बर का विकास हुआ।

5. पर्यावरणीय मुद्दों पर विश्व समुदाय की बढ़ती चिंता को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 'विश्व पर्यावरण और विकास आयोग' की स्थापना की, जिसके प्रमुख नार्वे की प्रधान मंत्री गरो हरलेम ब्रंटलैंड थी। इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट 'अवर कॉमन फ्यूचर' (जिसे ब्रंटलैंड रिपोर्ट भी कहते हैं) 1987 में प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट के अनुसार सतत पोषणीय विकास का अर्थ है- 'एक ऐसा विकास जिसमें भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकता पूर्ति को प्रभावित किए बिना वर्तमान पीढ़ी द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति करना।'

6. 'गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड' की स्थापना 1984 में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के रूप में प्राकृतिक गैस के परिवहन एवं विपणन के लिए की गई थी। गैस को सभी तेल क्षेत्रों में तेल के साथ प्राप्त किया जाता है। गैस के विशिष्ट भंडार तमिलनाडु के पूर्वी तट, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, त्रिपुरा, राजस्थान तथा गुजरात एवं महाराष्ट्र के अपतटीय कुओं में पाए गए हैं।

7. **औद्योगिक नगर-** विकास का प्रमुख अभिप्रेरक बल उद्योगों का विकास रहा है। उदाहरण- मुंबई, सेलम, कोयंबटूर, मोदीनगर, जमशेदपुर, हुगली, भिलाई इत्यादि।

परिवहन नगर- ये पत्तन नगर जो मुख्यत: आयात और निर्यात कार्यों में संलग्न रहते हैं। जैसे- कांडला, कोच्चि, कोझीकोड, विशाखापट्टनम, इत्यादि।

खनन नगर- ये नगर खनिज समृद्ध क्षेत्रों में विकसित हुए हैं। उदाहरण-रानीगंज, झरिया, डिगबोई, अंकलेश्वर, सिंगरौली इत्यादि।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

8.

- ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाले युवा-आयु, कुशल एवं दक्ष लोगों का बाह्य प्रवास ग्रामीण जनांकिकीय संघटन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।
- बाह्य प्रवास ने उद्गम स्थानों की आयु एवं लिंग संरचना में गंभीर असंतुलन पैदा कर दिया है। ऐसे ही असंतुलन गन्तव्य स्थानों में भी उत्पन्न हो गए हैं जिनमें ये प्रवासी जाते हैं।

9. भारत की जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले भौतिक कारकों की बात करें, तो यह स्पष्ट है कि भू-विन्यास और जल की उपलब्धता के साथ जलवायु प्रमुख रूप से वितरण के प्रतिरूपों का निर्धारण करती हैं। परिणामस्वरूप हम देखते हैं कि उत्तर भारत के मैदानों, डेल्टाओं और तटीय मैदानों में जनसंख्या का अनुपात दक्षिणी और मध्य भारत के राज्यों के आंतरिक जिलों, हिमालय, उत्तर-पूर्वी और पश्चिमी कुछ राज्यों की अपेक्षा उच्चतर है।

10. किसी क्षेत्र/राज्य/देश के प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में निवास करने वाली जनसंख्या उस क्षेत्र/राज्य/देश का जनसंख्या घनत्व कहलाता है।

इसे निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता है-

$$\text{जनसंख्या घनत्व} = \frac{\text{जनसंख्या}}{\text{क्षेत्रफल}}$$

उदाहरण- किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या 5000 है तथा उस क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल – 100 वर्ग किलोमीटर है।

$$\text{जनसंख्या घनत्व} = \frac{5000}{100} = \mathbf{50} \text{ व्यक्ति/वर्ग किमी.}$$

11. मानव विकास के निम्न स्तरों वाले देशों की संख्या 33 है। इनमें से अधिकांश छोटे देश हैं, जो वर्तमान में विभिन्न प्रकार की समस्याओं के दौर से गुजर रहे हैं।

इन देशों की तीन प्रमुख समस्याएँ निम्न हैं-

- राजनीतिक उपद्रव।
- गृहयुद्ध के रूप में सामाजिक अस्थिरता।
- अकाल अथवा बीमारियों की अधिक घटनाएँ।

12. सड़क परिवहन की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

- छोटी दूरियों के लिए सड़क परिवहन रेल परिवहन की अपेक्षा आर्थिक दृष्टि से लाभदायक होता है। सड़कों द्वारा माल का परिवहन महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है क्योंकि इसके द्वारा घर-घर तक वस्तुओं को पहुँचाया जा सकता है।
- सड़कें किसी भी देश के व्यापार और वाणिज्य को विकसित करने एवं पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

13. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की दो हानियाँ निम्नलिखित हैं-

- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आम लोगों के जीवन को अधिक संपन्न नहीं बनाता। धनी देशों को और अधिक धनी बनाकर यह वास्तव में गरीब और अमीर के बीच की खाई को बढ़ा रहा है।
- इसमें स्वास्थ्य, श्रमिकों के अधिकार, बाल श्रम और पर्यावरण जैसे मुद्दों की उपेक्षा की गई है।

14. मार्ग पत्तन (विश्राम पत्तन) : ये ऐसे पत्तन हैं, जो मूल रूप से मुख्य समुद्री मार्गों पर विश्राम केंद्र के रूप में विकसित हुए, जहाँ पर जहाज़ पुन: ईंधन भरने, जल भरने तथा खाद्य सामग्री लेने के लिए लंगर डाला करते थे। बाद में, वे वाणिज्यिक पत्तनों में विकसित हो गए। अदन, होनोलूलू तथा सिंगापुर इसके अच्छे उदाहरण हैं।

15. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने 'नगर रणनीति' में जो प्राथमिकताएँ बताई हैं, उनमें से तीन प्रमुख प्राथमिकताएँ निम्नलिखित हैं-

- नगरीय निर्धनों के लिए 'आश्रयस्थल' में वृद्धि।
- आधारभूत नगरीय सुविधाओं जैसे शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य, स्वच्छ जल और सफाई का प्रबंध आदि को उपलब्ध करवाना।
- महिलाओं की 'मूलभूत सेवाओं' तथा राजकीय सुविधाओं तक पहुँच में सुधार।

खण्ड-स

16. पंचम क्रियाकलाप-

उच्चतम स्तर के निर्णय लेने तथा नीतियों का निर्माण करने वाले पंचम क्रियाकलापों को निभाते हैं। इनमें और ज्ञान आधारित क्रियाओं, जो सामान्यतः चतुर्थ सेक्टर से जुड़ी होती हैं, में सूक्ष्म अंतर होता है।

पंचम क्रियाकलाप वे सेवाएँ हैं जो नवीन एवं वर्तमान विचारों की रचना, उनके पुनर्गठन और व्याख्या, आँकड़ों की व्याख्या और प्रयोग तथा नई प्रौद्योगिकी के मूल्यांकन पर केंद्रित होती हैं। प्रायः 'स्वर्ण कॉलर' कहे जाने वाले ये व्यवसाय तृतीयक सेक्टर का एक और उप-विभाग हैं जो वरिष्ठ व्यावसायिक कार्यकारियों, सरकारी अधिकारियों, अनुसंधान वैज्ञानिकों, वित्त एवं विधि परामर्शदाताओं इत्यादि की विशेष और उच्च वेतन वाली कुशलताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की संरचना में उनका महत्त्व उनकी संख्या से कहीं अधिक होता है।

17. भौगोलिक अवस्थिति- हुगली नदी के किनारे बसा हुआ, यह प्रदेश उत्तर में बाँसबेरिया से दक्षिण में बिडलानगर तक लगभग 100 किलोमीटर में फैला है।

उद्योगों का विकास पश्चिम में मेदनीपुर में भी हुआ है। कोलकाता-हावड़ा इस औद्योगिक प्रदेश के केंद्र हैं।

मुख्य उद्योग- इस क्षेत्र का विकास जूट उद्योग के साथ हुआ। जूट उद्योग के साथ ही सूती वस्त्र उद्योग भी पनपा। कागज, इंजीनियरिंग, टेक्सटाइल मशीनों, विद्युत, रासायनिक, औषधीय, उर्वरक और पेट्रो-रासायनिक उद्योगों का भी विस्तार हुआ।

प्रमुख केन्द्र- 1855 में रिशरा में पहली जूट मिल की स्थापना ने इस प्रदेश के आधुनिक औद्योगिक समूहन के युग का प्रारंभ किया। जूट उद्योग का मुख्य केंद्रीकरण हावड़ा और भटपारा में है।

इसके अतिरिक्त इस प्रदेश के महत्त्वपूर्ण औद्योगिक केंद्र कोलकाता, हल्दिया, सेरामपुर, रिशरा, शिबपुर, नैहाटी, काकीनारा, श्यामनगर, टीटागढ़, सौदेपुर, बजबज, बिडलानगर, बाँसबेरिया, त्रिवेणी, हुगली, बेलूर आदि हैं।

18. संचार जाल- आरंभ में परिवहन के साधन ही संचार के साधन होते थे। डाकघर, तार, प्रिंटिंग प्रेस, दूरभाष तथा उपग्रहों की खोज ने संचार को बहुत त्वरित एवं आसान बना दिया। विज्ञान

एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास ने संचार के क्षेत्र में क्रांति लाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इंटरनेट व अन्य तीव्र संचार माध्यमों ने पूरे विश्व में संचार जाल विकसित किये हैं।

संदेश पहुँचाने के लिए लोग संचार की विभिन्न विधाओं का उपयोग करते हैं। मापदंड एवं गुणवत्ता के आधार पर संचार साधनों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है-

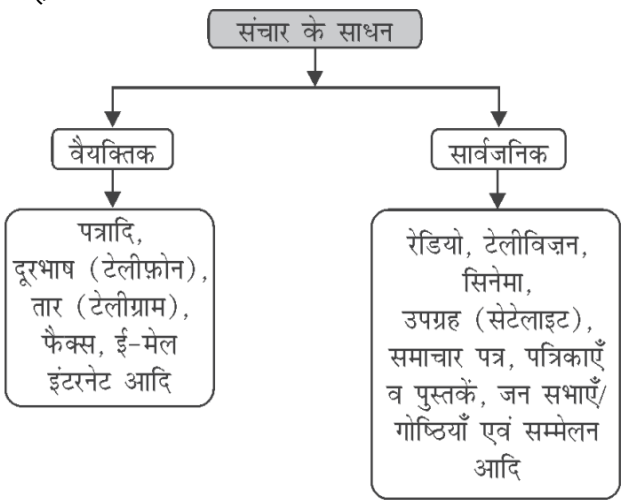

खण्ड - द

19. भू-उपयोग- इससे तात्पर्य मानव द्वारा धरातल के विविध रूपों में प्रयोग किये जाने वाले कार्यों से है। किसी क्षेत्र में भू-उपयोग, अधिकतर वहाँ की आर्थिक क्रियाओं की प्रवृत्ति पर निर्भर है। यद्यपि समय के साथ आर्थिक क्रियाओं में बदलाव आता रहता है लेकिन भूमि अन्य बहुत से संसाधनों की भाँति, क्षेत्रफल की दृष्टि से स्थायी है।

भारत में भू-उपयोग को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख कारक निम्न हैं-

(i) अर्थव्यवस्था का आकार- इसे उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य के संदर्भ में समझा जाता है। यदि अर्थव्यवस्था का आकार समय के साथ बढ़ता है, जो कि बढ़ती जनसंख्या, बदलते आय-स्तर, उपलब्ध प्रौद्योगिकी व इसी से मिलते-जुलते कारकों पर निर्भर है, तो समय के साथ भूमि पर दबाव बढ़ता है तथा सीमांत भूमि को भी प्रयोग में लाया जाता है।

(ii) अर्थव्यवस्था की संरचना- समय के साथ अर्थव्यवस्था की संरचना में भी बदलाव होता है। द्वितीयक व तृतीयक सेक्टरों में, प्राथमिक सेक्टर की अपेक्षा अधिक तीव्रता से वृद्धि होती है। इस प्रकार के परिवर्तन भारत जैसे विकासशील देश में एक सामान्य बात है। इस प्रकिया में धीरे-धीरे कृषि भूमि गैर-कृषि संबंधित कार्यों में प्रयुक्त होती है। आप पाएँगे कि इस प्रकार के परिवर्तन शहरों के चारों तरफ़ अधिक तीव्र हैं जहाँ कृषि भूमि को इमारतों के लिए उपयोग किया जा रहा है।

(iii) कृषि क्रियाकलापों का अर्थव्यवस्था में योगदान- यद्यपि समय के साथ, कृषि क्रियाकलापों का अर्थव्यवस्था में योगदान कम होता जाता है, भूमि पर कृषि क्रियाकलापों का दबाव कम नहीं होता। कृषि-भूमि पर बढ़ते दबाव के कारण हैं:- (अ) प्रायः विकासशील देशों में कृषि पर निर्भर व्यक्तियों का अनुपात अपेक्षाकृत धीरे-धीरे घटता है जबकि कृषि का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान तीव्रता से कम होता है। (ब) वह जनसंख्या जो कृषि सेक्टर पर निर्भर होती है, प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है।

अथवा

भारत में मोटे अनाज की दो मुख्य फसलें निम्नलिखित हैं-

ज्वार-

महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ- यह दक्षिण व मध्य भारत के अर्ध- शुष्क क्षेत्रों की प्रमुख खाद्य फ़सल है। उत्तर भारत में यह खरीफ़ की फ़सल है तथा मुख्यतः चारा फ़सल के रूप में उगायी जाती है। दक्षिणी राज्यों में यह खरीफ़ तथा रबी दोनों ऋतुओं में बोया जाता है।

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र- देश के कुल बोये क्षेत्र के 16.5 प्रतिशत भाग पर मोटे अनाज बोये जाते हैं। इनमें ज्वार प्रमुख है जो कुल बोए क्षेत्र के 5.3 प्रतिशत भाग पर बोया जाता है। महाराष्ट्र राज्य अकेला, देश की आधे से अधिक ज्वार का उत्पादन करता है। अन्य प्रमुख ज्वार उत्पादक राज्यों में कर्नाटक, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना हैं। विंध्याचल के दक्षिण में यह वर्षा आधारित फ़सल है तथा यहाँ इसकी उत्पादकता कम है।

बाजरा-

महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ- भारत के पश्चिम तथा उत्तर-पश्चिम भागों में गर्म तथा शुष्क जलवायु में बाजरा बोया जाता है। यह फ़सल इस क्षेत्र के शुष्क दौर तथा सूखा सहन करने में समर्थ है। यह एकल तथा मिश्रित फ़सल के रूप में बोया जाता है।

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र- यह फ़सल देश के कुल बोये क्षेत्र के लगभग 5.2 प्रतिशत भाग पर बोई जाती है। बाजरा उत्पादक प्रमुख राज्य– महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व हरियाणा है। वर्षा निर्भर फ़सल होने के कारण राजस्थान में इसकी उत्पादकता कम है तथा इसमें अत्यधिक उतार-चढ़ाव है। कुछ वर्षों से सूखा प्रतिरोधक किस्मों के आगमन से तथा गुजरात व हरियाणा में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार से इस फ़सल की पैदावार में वृद्धि हुई है।

20. परम्परागत बड़े पैमाने वाले उद्योगों की विशेषताएँ-

- यह भारी उद्योग के क्षेत्र होते हैं।
- इनमें कोयला खदानों के समीप स्थित धातु पिघलाने वाले उद्योग, भारी इंजीनियरिंग, रसायन निर्माण, वस्त्र उत्पादन इत्यादि का कार्य किया जाता है।
- इन्हें 'धुएँ की चिमनी वाला उद्योग' भी कहते हैं।
- निर्माण उद्योगों में रोजगार का अनुपात ऊँचा होता है।
- यहाँ उच्च गृह घनत्व जिसमें घर घटिया प्रकार के होते हैं, पाया जाता है।
- सेवाएँ अपर्याप्त होती है।
- वातावरण अनाकर्षक होता है जिसमें गंदगी के ढेर व प्रदूषण होता है।
- बेरोज़गारी की समस्या, उत्प्रवास, विश्वव्यापी माँग कम होने से कारखाने बंद होने के कारण परित्यक्त भूमि का क्षेत्र निर्मित हो जाता है।

आधुनिक बड़े पैमाने पर होने वाले विनिर्माण की विशेषताएँ-

कौशल का विशिष्टीकरण/उत्पादन की विधियाँ- शिल्प तरीके से कारखाने थोड़ा ही सामान उत्पादित किया जाता है। यदि सामान को आदेशानुसार बनाया जाता है, तो इसकी उत्पादन लागत अधिक आती है। अधिक उत्पादन का संबंध बड़े पैमाने पर बनाए जाने वाले सामान से है जिसमें प्रत्येक कारीगर निरंतर एक ही प्रकार का कार्य करता है।

यंत्रीकरण- अर्थ: यंत्रीकरण से तात्पर्य है किसी कार्य को पूर्ण करने के लिए मशीनों का प्रयोग करना। यंत्रीकरण का नवाचार- स्वचालित तंत्र, यंत्रीकरण की विकसित अवस्था है। पुनर्निवेशन एवं संवृत्त-पाश कंप्यूटर नियंत्रण प्रणाली से युक्त स्वचालित कारखाने पूरे विश्व में नज़र आने लगे हैं।

प्रौद्योगिकीय नवाचार- प्रौद्योगिक नवाचार आधुनिक बड़े पैमाने पर होने वाले विनिर्माण की महत्त्वपूर्ण विशेषता है-

प्रौद्योगिक नवाचार का अनुप्रयोग- शोध एवं विकासमान युक्तियों के द्वारा विनिर्माण की गुणवत्ता को नियंत्रित करना, अपशिष्टों के निस्तारण, अदक्षता को समाप्त करना, प्रदूषण के विरुद्ध संघर्ष करना।

संगठनात्मक ढाँचा एवं स्तरीकरण- एक जटिल प्रोद्यौगिकी तंत्र, अत्यधिक विशिष्टीकरण एवं श्रम विभाजन के द्वारा कम प्रयास एवं अल्प लागत से अधिक माल का उत्पादन करना, अधिक पूँजी, बड़े संगठन, प्रशासकीय अधिकारी-वर्ग।

अथवा

- **लौह इस्पात उद्योग-**

(i) उत्पादन प्रक्रिया - लोहा निकालने के लिए लौह-अयस्क को झोंका भट्टियों में कार्बन एवं चूना पत्थर के साथ प्रगलन किया जाता है। पिघला हुआ लौह बाहर निकलकर जब ठंडा हो जाता है तो उसे कच्चा लोहा कहते हैं। इसी कच्चे लोहे में मैंगनीज मिलाकर इस्पात बनाया जाता है।

(ii) विश्व वितरण-

उत्तरी अमेरिका- उत्तर अप्लेशियन प्रदेश (पिट्सबर्ग), महान झील क्षेत्र (शिकागो-गैरी, बफैलो एवं ड्युलुथ), एटलांटिक तट, दक्षिणी राज्य अलाबामा आदि।

यूरोप- ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, बेल्जियम, लक्ज़मबर्ग, नीदरलैंड एवं सोवियत रूस इसके मुख्य उत्पादक हैं।

एशिया- जापान में नागासाकी एवं टोक्यो, चीन में शंघाई एवं वूहान, भारत में जमशेदपुर, कुल्टी-बुरहानपुर, दुर्गापुर, राउरकेला, भिलाई, बोकारो, सलेम, विशाखापटनम एवं भद्रावती आदि मुख्य लौह इस्पात उद्योग केन्द्र हैं।

- **सूती वस्त्र उद्योग**

(i) उत्पादन प्रक्रिया- सूती वस्त्र के उत्पादन में हथकरघा क्षेत्र में अधिक श्रमिकों की आवश्यकता होती है। यह अर्द्धकुशल श्रमिकों को रोज़गार प्रदान करता है। पूँजी की आवश्यकता भी इसमें कम होती है। इसके अंतर्गत सूत की कताई, बुनाई आदि का कार्य किया जाता है। बिजली करघों से कपड़ा बनाने में यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। अतः इसमें श्रमिकों की कम आवश्कता पड़ती है एवं उत्पादन भी अधिक होता है।

(ii) विश्व वितरण- सूती वस्त्र निर्माण के लिए कच्चे माल के रूप में अच्छी किस्म की कपास चाहिए। विश्व के 50 प्रतिशत से अधिक कपास का उत्पादन भारत, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, पाकिस्तान, उज्बेकिस्तान एवं मिस्र में किया जाता है। ग्रेट ब्रिटेन, उत्तरी पश्चिमी यूरोप के देश एवं जापान भी आयातित धागे से सूती कपड़े का उत्पादन करते हैं। अकेला यूरोप विश्व का लगभग आधा कपास आयात करता है।

खण्ड - य

21.

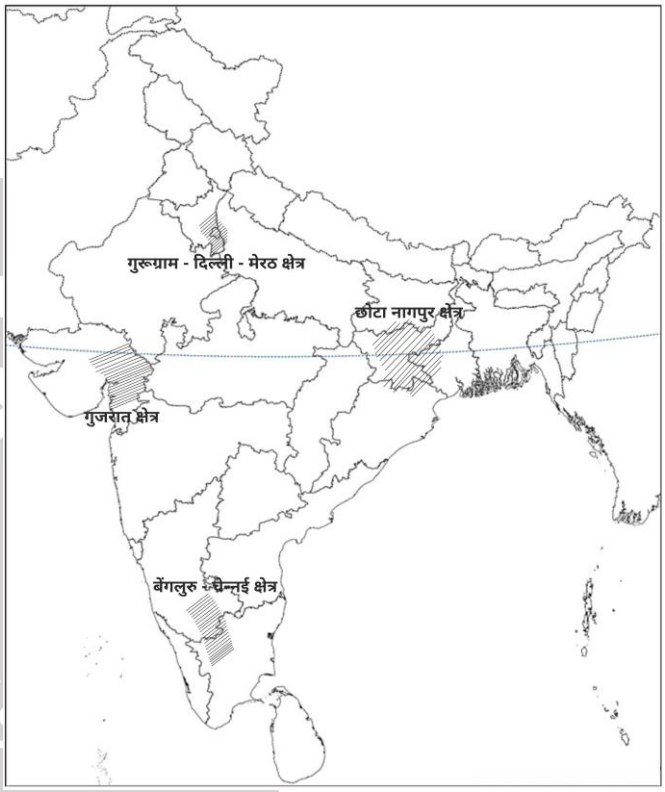

22.

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध

QR Code Scan
कर आज ही
'उत्कर्ष एप'
डाउनलोड करें

Academic Session 2022-23

Class VI-VIII	~~₹10,000~~	₹1999	CBSE | RBSE & Other 7 State Boards
Class IX-X	~~₹15,000~~	₹2999	
Class XI-XII	~~₹18,000~~	₹3499	

₹1200/- per subject Live	₹600/- per subject Recorded

Class XI-XII
(Science, Commerce & Arts)

• **LIVE & Recorded Classes** • **English & Hindi Medium**

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर
Utkarsh Online Tuition के साथ

उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com